वैदिक शब्दावली

- 19th lecture by -

Mamta Rani
[History Depart.]
SNSRK's COLLEGE,
SAHARSA

21-04-2020

Scanned with CamScanner

# वैदिक शब्दावली



-19th lecture.

गविष्टि - गायों की गवेषणा,
रयि - वैदिक युग में संपत्ति के लिए प्रयुक्त
अदेवयु - देवताओं में श्रद्धा न रखने के लिए प्रयुक्त।
अब्रह्मन - वेदों को न मानने वाले
अयज्वन - यज्ञ न करने वाले
अनास - कटु वाणी वाले, इसका प्रयोग आर्यों के शत्रु पणियों के लिए भी किया गया।
व्राजपति - चारागाह का अधिकारी
कुलप - परिवार का मुखिया
ग्रामणी - लड़ाकू दलों के प्रधान।
जन या विश - वैदिक कबीले (प्रजाजन)
नप्त - नाती, पोता, चचेरे भाई बहन इत्यादि।
संहिता - वैदिक सूक्तों या मंत्रों का संग्रह।
बलि - राजा को स्वेच्छा से दी गयी भेंट।
राष्ट्र - प्रदेश या राज्यक्षेत्र (वैदिक युग में पहली बार प्रयुक्त)
होतृ या होता - ऋग्वेद में उल्लिखित श्लोक उच्चारित करने वाले ऋषि।
अध्वर्यु - यज्ञ संबंधी मंत्रों का उच्चारण करने वाले पुरोहित यजुर्वेद में उल्लिखित
उद्गाता - यज्ञ संबंधी मंत्रों को गानेवाले पुरोहित सामवेद में उल्लेख।
गोघ्न - अतिथि
अनस - भारवाही शक्ति
शाला - निवास स्थान।
दुरोण - स्थायी निवास
विराज - भूमि
माष - मूंग
कृषन्त - जुताई
गोप्ता - रक्षक

Scanned with CamScanner

कोसाश - किसान
श्रेष्ठी - प्रधान व्यापारी
कुसीदी - सूद लेने वाला
वस्तु - धन

## —: षोडस संस्कार :—

(1) गर्भाधान - गर्भ में बीजारोपण
(2) पुंसवन - पुत्र प्राप्ति हेतु तीसरे महीने में
(3) सीमान्तोनयन - गर्भ के स्थैर्य, चतुर्थ महीने में
(4) जातकर्म - जन्म के समय अनिष्कारी प्रभावों से बचानेहेतु
(5) नामकरण - जन्म के ~~समय~~ 10 से 12 वें दिन नाम-करण हेतु।
(6) निष्क्रमण - जन्म के चतुर्थ महीने तक, बच्चे को घर से बाहर निकालने हेतु।
(7) अन्नप्राशन - जन्म के छठे महीने, प्रथम बार अन्न ग्रहण हेतु।
(8) चूड़ाकर्म - जन्म के प्रथम व तृतीय वर्ष, बच्चेके मुंडन हेतु।
(9) कर्णवेधन - बालक के कान छेदने हेतु, जन्म के सातवें वर्ष।
(10) विद्यारंभ - बालक को अक्षरोका ज्ञान शुरुकरानेहेतु।
(11) उपनयन - आचार्य के पास शिक्षाहेतु जाने पुर्व किया जाने वाला।
(12) वेदारम्भ - गुरु के सानिध्य मे जाने पर शिक्षा प्रारंभहेतु।
(13) केशान्त (गोदान) - सोलहवे वर्ष, गुरु शिक्षा ग्रहण करने के बाद
(14) समावर्तन - शिक्षा उपरांत गृह वापसी पर
(15) विवाह - गृहस्थ जीवन में प्रवेशहेतु।
(16) अंत्येष्ठि - मृत मनुष्य की आत्मा को शांति हेतु।

Scanned with CamScanner

# विवाह के प्रकार :-

1. ब्राह्म - योग्य वर को सुसज्जित कन्या का दान
2. दैव - ऋषियों की उपस्थिति में विद्वान को वधू का दान।
3. आर्ष - दो गायों के बदले कन्या का दान।
4. प्रजापत्य - वर-वधू को धर्मानुसार विवाह
5. गंधर्व - काम के वशीभूत युवक-युवती द्वारा गुप्त विवाह।
6. आसुर - कन्या के पिता को धन देकर विवाह
7. राक्षस - कन्या का बलपूर्वक हरण
8. पैशाच - सोई हुई कन्या को उठा ले जाना।

Scanned with CamScanner